प्रकाशन तिथि : 01 फरवरी, 2022
प्रेषण तिथि : 04 फरवरी, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 22 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हर्षोल्लास से मनाई पूज्य श्री तनसिंह जी की 98वीं जयन्ती

25 जनवरी 2022 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तन सिंह जी की 98वीं जयंती देशभर में उत्साह पूर्वक मनाई गई। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में ट्विटर स्पेस पर वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन सायं 8:15 बजे किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि वैसे तो किसी भी महापुरुष का परिचय बोला जा सकता है, सुना जा सकता है लेकिन वास्तव में किसी महापुरुष का परिचय जानने के लिए उन्होंने जैसा जीवन किया है उस जीवन को जी कर देखना पड़ता है। जो उनके जैसा जीवन जीयेगा वही उनके अनुभव को जान सकता है और उनका वास्तविक परिचय बता सकता है। पूज्य तनसिंह के बताए मार्ग पर हम जितने अंशो में चल पाते हैं, उतना ही हम तनसिंह जी को जान पाते हैं। हम यदि पूज्य तनसिंह जी द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि को देखें तो पाएंगे कि किस प्रकार भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व राजपूत जाति, विशेषकर राजस्थान में किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में थी। यह वह समय था जब समाज में नेतृत्व की कमी थी, आदर्शों का अभाव था, समाज में ना अपने अधिकारों के लिए लड़ने की कोई आकांक्षा थी और ना ही आने वाले युग में अपनी भूमिका के प्रति कोई चेतना थी। हमारा परंपरागत नेतृत्व भी अपने आप में असहाय था। पूरा समाज अंधेरे में ठोकरे खा रहा था। हम कह सकते हैं कि हमारा समाज पतन के उस गहरे कुएं के किनारे पर था जिसके अंदर गिरने के पश्चात किसी का निकलना संभव नहीं था। समाज के सामने सबसे ज्वलंत प्रश्न यह था कि अपने अस्तित्व को किस प्रकार कायम रखा जाए। परशुराम के फरसे से टकराने वाली, हूणों और शकों के तूफानों से संघर्ष करने वाली, मुगलों और यूनानियों के दांत खट्टे करने वाली जो कौम थी, उसको इस प्रचार तंत्र के युग में अंग्रेजों द्वारा जिस प्रकार से मनोवैज्ञानिक चोट दी गई थी, उसने हमको संघर्षहीन बना दिया, मानसिक रूप से गुलाम बना दिया। (शेष पृष्ठ 2 पर)

'जो तनसिंह जी हैं वहीं संघ है'

(आलोक आश्रम बाड़मेर में आयोजित पूज्य श्री तनसिंह जी जयन्ती कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री के उद्बोधन का सम्पादित अंश)

पूज्य तनसिंह जी के बारे में जो बताया जा सकता था, बताया जा चुका है और आप लोग बहुत पढ़ चुके हैं। इतिहास बनाने आए थे, तीर्थ बनाने आए थे, क्या क्या करने आए थे वह तनसिंह जी ने इस गीत में, जो अभी गाया, सब कुछ बता दिया कि मैं इस धरती पर क्यों आया था, कुछ बाकी नहीं रखा। शरीर की एक सीमा होती है, उस सीमा में वो यह सब करके गए। शरीर जब जर्जर हो जाता है तो शरीर छूट जाता है। आत्मा ना कहीं आती है, न जाती है। आज भी तनसिंह जी अनेकों रूपों में हमारे बीच में विद्यमान है। चाहे वह जयपुर हो, चाहे जोधपुर हो, चाहे बाड़मेर हो या अन्य कोई जगह हो, देश हो या विदेश हो, सभी जगह आत्म रूप से वे विद्यमान है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की सारी साधना, उसमें से माइनस कर दें तनसिंह जी को तो कुछ बचता नहीं है। इसलिए जो तन सिंह जी है वही श्री क्षत्रिय युवक संघ है पर जो श्री क्षत्रिय युवक संघ है वह तनसिंह जी हो यह आवश्यक नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ तो कोई भी बना सकता है लेकिन तनसिंह किसी को बनाया नहीं जा सकता। (शेष पृष्ठ 7 पर)

बहुत काम किया है, बहुत करना बाकी है: संरक्षक श्री

जो लोग श्री क्षत्रिय युवक संघ से पहले नहीं जुड़े और हमने यह मान लिया कि यह हमारे काम के नहीं हैं, उनके बारे में विचार किया गया कि किस प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण के कार्य से वंचित युवाओं को अपने से जोड़ें। इस भाव के साथ जब भी मिलते थे, बात करते थे, तब यह फाउंडेशन का नाम, उद्देश्य आदि निकल कर आया। लोगों को चुना गया कि इसमें कौन काम कर सकते हैं, उन लोगों को बुलाकर बातचीत की गई और 12 जनवरी 2019 को इसकी विधिवत स्थापना की गई। काम खूब हुआ,

नए लोगों में ऊर्जा खूब थी। मैं सुनता रहता था कि आज यहां बैठक है, आज वहाँ है। बहुत खुशी होती थी कि हमारे बच्चे ठीक काम कर रहे हैं और इस प्रकार से कई और फ्रंट खोले जाने चाहिए। तो भविष्य में अभी भी संभावना है कि कुछ और फ्रंट खुलें और संपूर्ण समाज को हम जोड़ सकें। क्षत्रिय समाज को भी और समाज की व्याख्या के अनुसार अन्य सभी लोगों को मिल कर भी कि हम सब एक ही समाज है, यह संदेश हम दे सकें। अभी जो हीरक जयंती मनाई गई उसमें यह संदेश दिया गया। वो आप लोगों की मेहनत का परिणाम था। आपने जो काम किया वो फलीभूत हुआ श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती के समारोह में। 12 जनवरी को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित सहयोगियों को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आप सब ने काम किया, आप सब को बहुत अच्छा लगा लेकिन तन सिंह जी के लिखे हुए साहित्य को पढ़ना मेरे खयाल से अभी तक शेष है। अभी हम कुछ गफलत करते हैं जो हमको नहीं करनी चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जो नियम हैं, श्री क्षत्रिय युवक संघ की जो व्यवस्थाएं हैं उसके अनुसार श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन नहीं बनेगा तो कमजोरी रह जाएगी और उस कमजोरी के कारण यह बिखर भी सकता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हर्षोल्लास से मनाई पूज्य श्री तनसिंह जी की 98वीं जयन्ती

(पेज एक से लगातार)

उस समय समाज को उस पतन के कुएं में गिरने से रोककर उत्थान की ओर मोड़ने के लिए आवश्यकता थी उसे स्वधर्म पालन का पाठ पढ़ाने की। ऐसी परिस्थितियों में इस रत्न गर्भा कौम के गर्भ से पूज्य तनसिंह जी जैसे महापुरुष का अवतरण हुआ और उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में समाज को स्वधर्म पालन का मार्ग दिया। इससे पूर्व केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने उपस्थित समाजबन्धुओं को पूज्य श्री तनसिंह जी का जीवन परिचय देते हुए कहा कि पूज्य तन सिंह जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। एक राजनीतिज्ञ के रूप में, लेखक के रूप में, व्यवसायी के रूप में, वकील के रूप में, किसान के रूप में, नेतृत्व कर्ता के रूप में, संगठन कर्ता के रूप में उनकी विशेषताएं अद्वितीय थी लेकिन उनमें से किसी भी विशेषता का उन्होंने अपने व्यक्तिगत हित के लिए प्रयोग नहीं किया बल्कि अपनी असाधारणताओं को सामाजिक न्यास बनाया और समाज के साधारण व्यक्तियों को असाधारण बनाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसा मार्ग दिया। समाज के प्रति उनकी इस पीड़ा ने ही उन्हें महापुरुष बनाया और आज पूरा समाज स्वतः स्फूर्त उनकी जयन्ती मना रहा है। कार्यक्रम में सैकड़ो समाजबन्धुओं ने उपस्थित रहकर पूज्य तनसिंह जी को नमन किया।

बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के सानिध्य में जयंती मनाई गई जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु सम्मिलित हुए तथा पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। संघशक्ति कार्यालय में सायं 6:30 बजे जयन्ती के उपलक्ष्य में भजन संध्या का कार्यक्रम माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जयपुर पश्चिम प्रान्त में कृष्णा टावर, प्रताप सर्किल, कालवाड़ रोड में जयन्ती कार्यक्रम रखा गया जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया। जयपुर में ही रमन पब्लिक स्कूल चांद बिहारी नगर, खातीपुरा में पूज्य श्री तनसिंह जी जयंती महिला मंडल के द्वारा मनाई गई जिसमें मातृशक्ति ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन संतोष कंवर सिसरवादा ने किया। राव शेखा जी शाखा स्थल 21 नंबर बस स्टैंड सिरसी रोड, जयपुर में भी कार्यक्रम हुआ। जोधपुर संभाग में जोधपुर शहर प्रान्त में हनवंत छात्रावास, तनायन कार्यालय, बीजेएस कॉलोनी, राजेन्द्र नगर, डिगाडी स्कूल, झालामण्ड, चौपासनी शिक्षक कोलोनी, भोमियाजी कॉलोनी संगरिया, राजपुत छात्रावास भवन सांगरिया गांव, नवदुर्गा मंदिर, जय भवानी नगर (महिला), सरदार छात्रावास, ओम नगर, अग्निहोत्रीपुरम चौपासनी, विजय नगर चौपासनी, ओल्ड कैंपस, आशापूर्णा नैनो मैक्स कॉलोनी व पाल में कार्यक्रम आयोजित हुए। शेरगढ़ प्रान्त के देवातु, निम्बा का गांव, घुडियाला, बेलवा, तेना, शेरगढ़, जिनजिनयाला कल्ला, लोडता, बालेसर, चामू, बेलवा सगतनगर, नाहर सिंह नगर, जेठानियाँ, भूंगरा, आदर्श विद्यालय देचू, नाथड़ाऊ, सरस्वती विद्यालय देचू, मदासर देडा, आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल सोलंकियातला, राजगढ में कार्यक्रम रखे गए। भोपालगढ़ प्रान्त के साथिन, खेजड़ला, रणसी गांव, नांदिया प्रभावती, खारिया खंगार, ताँबाड़िया कल्ला में तथा ओसिया फलोदी प्रान्त के बापिणी, राजपूत छात्रावास फलोदी, बामनू, कल्याण सिंह की सीड, गणेश विद्यालय बापिणी, बाप, खीरवा, कानसिंह की सिड्डु, निम्बो का तालाब आदि स्थानों पर जयन्ती मनाई गई। नागौर संभाग में अमर राजपूत छात्रावास नागौर, छापड़ा, ऊचाईड़ा, जाखण, गूगरियाली, साठिका, सागुबड़ी, भंडारी, मामड़ोदा, बेगसर, छोटी खाटू, थेबड़ी, डसाणा, बरांगना, डीडवाना सभा भवन, कुचामन, मेड़ता सिटी, रियाबड़ी, गोटन, गगराणा, रताउ, धुडिला, खामियाद, गोटन, बरडवा, कोयल, निम्बी जोधा, तंवरा, जायल, रोजा, ढींगसरी व सिंघाना में पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। पाली जिले में रावली पोल शाखा धींगाणा, राजपूत छात्रावास सोजत सिटी, छोटी रानी, रावली पोल बागोल, चामुंडा माता मंदिर शाखा सारंगवास, चम्पावत पोल हेमावास, कृष्णा टेंट हाउस जोजावर, रावली पोल मेवी कलां, वीर शिरोमणि दुगार्दास राठौड़ छात्रावास पाली, रायपुर, बाली राजपुत छात्रावास, राजपुत सभा भवन राजेंद्र नगर पाली (बालिका शाखा), सुमेरपुर, जाखोडा, चांपावत पोल बांता, रावली पोल गुडांगिरी, रावली पोल मेसिया (जैतारण), रावली पोल शाखा जेतपुर, रावली पोल गुडासुरसिंह, चोकडिया, खोखरा, संस्कार माध्यमिक विद्यालय लोड़ता हरीदासोता आदि स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। बीकानेर संभाग में स्थानीय कार्यालय नारायण निकेतन में तथा विराट नगर, सादुल राजपूत छात्रावास, बेलासर, गीगासर में कार्यक्रम हुए। श्री डूंगरगढ़ प्रांत में श्री डूंगरगढ़ शहर, पुन्दलसर, मिंगसरिया, राजपुरा, झंझेउ, जोधासर, लखासर में कार्यक्रम आयोजित हुए। चूरु प्रांत में सरदारशहर, तारानगर, दसुसर, भूकरका में कार्यक्रम हुए। चुरू में सादुलपुर के बीराण गांव में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें पूर्व विधायक मनोज न्यांगली एवं सरपंच प्रतिनिधि संतु सिंह भोजाण ने पुष्पांजलि अर्पित की। प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। प्रांत नोखा कोलायत में कोलायत शहर और भेलू में कार्यक्रम हुए। सिवाना प्रांत में श्री कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास सिवाना, वांकल माता मंदिर पादरड़ी, भायलों की वास इन्द्राणा, राजकीय विद्यालय सिनेर, जमाड़ी नाड़ा स्कूल धीरा, सरोज बाल निकेतन कुण्डल व जैतमाल राजपूत छात्रावास पादरु में जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सीकर जिले में श्री कल्याण राजपूत छात्रावास, नाथावतपुरा स्थित मीरां गर्ल्स स्कूल तथा कासली में जयन्ती मनाई गई। सेड़वा मंडल के ग्राम पंचायत गंगासरा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में आयोजित जयन्ती कार्यक्रम में संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा भेजी गई यथार्थ गीता उपस्थित शिक्षकों को प्रदान की गई। श्री कृष्णा छात्रावास हरसाणी, श्री भवानी छात्रावास गांधीनगर (बाड़मेर) व श्री उत्तम विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय रामसर बाड़मेर में भी कार्यक्रम हुए। श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन में आयोजित कार्यक्रम को कमल सिंह गेंहू ने सम्बोधित किया। बालोतरा स्थित वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास, न्यू आदर्श बाल मंदिर थोब, सावर (अजमेर), पिपलाज (अजमेर) की बालिका शाखा, चित्तौड़गढ़, कोटा व उदयपुर में भी जयन्ती मनाई गई। चित्तौड़गढ़ स्थित श्री भूपाल पब्लिक स्कूल परिसर में केंद्रीय कार्यकारी श्री गंगा सिंह साजियाली की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। श्री भूपाल नोबल्स के ओल्ड बॉयज भवन में आयोजित कार्यक्रम में संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारडा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। डूंगरपुर में गेहूवाड़ा के महाराज शक्ति सिंह मैदान पर भी जयंती मनाई गई। दौसा प्रांत में मानस विद्यापीठ लूनियावास, बाढमोचिगंपुरा व बहडखो में, अलवर प्रान्त में पीपली में तथा दिल्ली प्रान्त में फरीदाबाद व गाँधी चौक में जयन्ती मनाई गई। उत्तरप्रदेश के बिजनोर जिले के मोरना स्थित महाराजा मुकुट सिंह शेखावत संस्थान में भी पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। उत्तर मुंबई प्रांत की मलाड व भायंदर शाखा में भी कार्यक्रम रखा गया। पुणे प्रांत में पूज्य तनसिंह जी की जयंती वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुमान सिंह बिखरनिया की उपस्थिति में मनाई गई।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बाड़मेर, सिवाना व जोधपुर में आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयन्ती कार्यक्रम में समाज से मिले सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में 16 जनवरी को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि हीरक जयन्ती कार्यक्रम की सफलता की खूब प्रशंसा हो रही है और हम उस प्रशंसा में प्रफुल्लित हो रहे हैं, हमारी कौम प्रफुल्लित हो रही है, पूरे समाज व देश में यह कार्यक्रम एक उदाहरण बना। पर हमें प्रफुल्लित होने की नहीं बल्कि समाज व परमात्मा के प्रति कृतज्ञ होने की आवश्यकता है। परमेश्वर की कृपा से ही हीरक जयंती का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हो सका। विचार करें कि क्या हम अपनी क्षमताओं से इतना बड़ा कार्यक्रम कर सकते थे? क्या हमारे पास इतने साधन उपलब्ध थे? वास्तव में यह कार्यक्रम हम में से किसी ने नहीं किया, यह तो परमात्मा की कृपा से ही सम्भव हो सका। जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में जब बर्बरीक से पूछा गया कि इस युद्ध में कौन श्रेष्ठतम योद्धा था तो उसने उत्तर दिया कि मैंने तो सिर्फ श्री कृष्ण को ही लड़ते देखा, अन्य कोई योद्धा तो इस युद्ध में लड़ा ही नहीं। उसी प्रकार इस कार्यक्रम का श्रेय पूज्य श्री तन सिंह जी द्वारा किए गए पुण्य कार्यों को ही दिया जाना चाहिए। उन्हीं की भांति हमें भी समाज में आदर्श स्थापित करने के लिए अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें अपने महान पूर्वजों का अनुसरण करना चाहिए और स्वयं के लिए जीने के स्थान पर अन्यों के लिए जीवन जीना सीखना चाहिए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षाविद कमल सिंह चूली ने कहा कि हमें मनुष्य जन्म मिला है तो हमें अपने आचरण से इसकी सार्थकता सिद्ध करनी चाहिए। संघ अपने जीवन को सार्थक बनाने का श्रेष्ठतम मार्ग है, इसलिए पूर्ण निष्ठा से इस मार्ग पर चलते रहें। वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा, बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, पूर्व विधायक जालम सिंह रावलोत, नीम्बसिंह उण्डखा , स्वरूपसिंह धारवी, नारायण सिंह कपूरडी और चंद्रवीर सिंह राव ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। 16 जनवरी को ही सिवाना स्थित कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास में भी आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संभागप्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने हीरक जयन्ती कार्यक्रम में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि आप सभी के सहयोग से ही हीरक जयन्ती कार्यक्रम संपन्न हुआ और हमारे समाज के अनुशासन व एकता की सभी ओर चर्चा और प्रशंसा हो रही है। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयं सेवक छतरसिंह देवंदी, रिड़मलसिंह बेरसियाला, हनवंतसिंह मवड़ी, वीर सिंह इन्द्राणा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। 15 जनवरी को जोधपुर स्थित तनायन कार्यालय में मातृशक्ति का स्नेहमिलन व स्नेहभोज कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें हीरक जयन्ती के अनुभव व संघकार्य में महिलाओं की सक्रियता पर चर्चा हुई तथा हीरक जयन्ती में मातृशक्ति के सहयोग के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई।

केन्द्रीय परिषद की प्रथम बैठक पुष्कर में संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउन्डेशन के चतुर्थ वर्ष के लिए मनोनीत केन्द्रीय परिषद की प्रथम बैठक 16 जनवरी को पुष्कर स्थित डिविट वर्ल्ड स्कूल में संपन्न हुई। बैठक में सभी नवनियुक्त सदस्य उपस्थित हुए एवं आगामी छः माह की कार्ययोजना बनाई गई। नवनियुक्त जिला टीमों को के साथ समन्वय स्थापित कर SKPF के उद्धेश्य की प्राप्ति हेतु समग्र रूप से काम करने के लिए जिला प्रभारी नियुक्त किए गये। फाउंडेशन के संपर्क में आने वाले समाज बंधुओं को शाखा, शिविर आदि सांघिक क्रियाकलापों से जोड़कर संघ की मूल कार्यप्रणाली से परिचित करवाने के लिए एक समिति बनाकर सभी का समन्वय करने का दायित्व सौंपा गया। संवैधानिक मूल्यों की हमारे पूर्वजों के जीवन मूल्यों से साम्यता बताकर उनके शिक्षण हेतु साहित्य तैयार करने, भौतिक व वर्चुअल कार्यशालाएं आयोजित करने आदि कार्यों के लिए भी एक समिति बनाकर सहयोगियों को दायित्व सौंपा गया। संवैधानिक साधनों व सरकारी योजनाओं के समुचित शिक्षण

के लिए भी समुचित कार्ययोजना बनाकर उस पर कार्य करने के लिए कुछ सहयोगियों को दायित्व सौंपा गया। कुछ सहयोगियों की एक समिति बनाकर यह दायित्व सौंपा गया कि वे समय समय पर सरकार के सन्मुख उठाये जाने वाले विषयों का चयन करें एवं उसकी समुचित कार्ययोजना बनायें। सरकारी अधिकारियों, व्यवसायियों, राजनेताओं आदि के बीच संपर्क, समन्वय व सहयोग स्थापित कर उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए वर्गवार अलग अलग समितियों का गठन किया गया। समाज के विद्यार्थियों के प्रोत्साहन व विगत वर्ष की भांति उनकी प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करने के लिए चर्चा कर दायित्व सौंपे गये। सोशल मीडिया व अन्य सूचना तकनीक संबंधी कार्यों के लिए भी चर्चा कर टीम बनाई गई। अन्य समाजों से सम्मानपूर्वक समन्वय हेतु भी संभावित कार्यक्रमों पर चर्चा की गई एवं इस हेतु सहयोगी तय किए गए। बैठक में श्री प्रताप फाउंडेशन के संदेश को आम राजपूत तक पहुंचाने के लिए एक राज्य व्यापी अभियान चलाने के लिए विचार विमर्श किया गया। इसके लिए आगामी विधानसभा चुनावों से पहले एक राज्यव्यापी यात्रा को लेकर चर्चा की गई। बैठक में राजपूतों के नेतृत्व में एक किसान संगठन बनाने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया। इसी प्रकार सेवानिवृत्त अधिकारियों की ऊर्जा के उपयोग की योजना बनाने के लिए भी चर्चा की गई। बैठक के अंत में विगत वर्ष श्री प्रकाश सिंह भदरु के संयोजकत्व में आयोजित क्षत्रिय विद्यार्थी प्रतिभा खोज परीक्षा की स्मारिका का विमोचन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस परीक्षा में 2 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया जिनमें से दो चरणों की परीक्षा के बाद 33 प्रतिभाओं का चयन किया गया है जिनको अधिकारियों का स्नेहमिलन कर पुरस्कार दिया जाएगा। बैठक में तय किया गया कि केन्द्रीय परिषद की अगली बैठक जुलाई में आयोजित की जाएगी जिसमें आज लिए गये लक्ष्यों की अर्द्ध वार्षिक समीक्षा की जाएगी। सभी समन्वयक अपने- अपने कार्य की मासिक रिपोर्ट भी प्रेषित करते रहेंगे।

पूज्य तनसिंह जयन्ती के उपलक्ष में मार्गदर्शन संगोष्ठी का आयोजन

गुजरात में कच्छ प्रान्त में पूज्य श्री तनसिंहजी की जयंती के उपलक्ष में रोटरी हॉल, मुंद्रा में प्रतियोगी परीक्षाओं (पुलिस कांस्टेबल, पीएसआई एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाएं) की तैयारी के लिए 23 जनवरी को मार्गदर्शन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जयपालसिंह धोलेरा ने पूज्य श्री तनसिंह जी का संक्षिप्त परिचय दिया। निर्मलसिंह रहेवर (पीएसआई), भारतीबा सोढा (कुटीर उद्योग अधिकारी वर्ग-II, भुज) एवं ऋषिराजसिंह जडेजा (जी.पी.एस.सी. वर्ग-II, DGP कार्यालय गांधीनगर) द्वारा पुलिस भर्ती और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के विषय में मार्गदर्शन दिया गया और विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। वक्ताओं को यथार्थ गीता व गीता और समाज सेवा पुस्तकें भेंट की गई। ध्रुवराजसिंह चुडासमा (अध्यक्ष श्री रोटरी क्लब, मुंद्रा) द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। हकुमतसिंह भुजपुर, महावीर सिंह मुन्द्रा ने व्यवस्था में सहयोग किया।

संपादकीय

बेदर्द जमाना है, कोई ना किसी का रे

हमारी जमाने से बहुत सारी शिकायतें हैं। हम लगातार ये शिकायतें करते रहते हैं। सोशल मीडिया के आने के बाद तो शिकायतों का अंबार ही लग गया है। हर कोई शिकायत करता नजर आता है। कोई कहता है कि कानून हमारे खिलाफ बनाये गये और उन कानूनों का सहारा लेकर हमें कमजोर किया गया। कोई कहता है कि समाज के विभिन्न वर्ग हमारे विरुद्ध एक षड़यंत्र चला रहे हैं और उन षड़यंत्रों के माध्यम से हमें मिटाने के प्रयास हो रहे हैं। कोई कहता है कि राजनीतिक दल हमारे खिलाफ हैं और वे येन केन प्रकारेण हमें सत्ता के केन्द्रों से बेदखल ही रखना चाहते हैं। कोई रोजगार को लेकर शिकायत करता है तो कोई आर्थिक स्थिति को लेकर। कोई शैक्षणिक पिछड़ेपन की बात करता है तो कोई राजनीतिक पिछड़ेपन की। कोई रूढियों को लेकर शिकायत करता है तो कोई फेशन परस्ती को लेकर। अनेक लोग तो एक नई बात करते हुए मिल जाएंगे कि राजपूत इस व्यवस्था में पीड़ित हुए हैं और उन्हें पीड़ित के रूप में स्वयं को पेश करना चाहिए। उनका मानना है कि ऐसा करने से हमें सहानुभूति मिलेगी और उसके परिणाम स्वरूप हमें जन समर्थन मिलेगा और हमें पीड़ा पहुंचाने वालों के प्रति संपूर्ण समाज का दृष्टिकोण बदलेगा। उनके शोषण को उजागर करेंगे और स्वयं को शोषित के रूप में पेश करेंगे तो लोग हमारे दर्द को समझेंगे। उनका यह विश्लेषण कितना सही है यह तो वे जानें लेकिन क्या जमाना किसी के दर्द को समझता है? क्या जमाना बेदर्द नहीं है? क्या जमाने में किसी के दर्द से किसी को सरोकार है? वास्तविकता तो यह है कि जमाना बेदर्द ही है, जमाना आज बेदर्द हुआ है ऐसा नहीं है बल्कि जमाना सदा से बेदर्द ही रहा है। ऐसे में बेदर्द जमाने के सामने रोना रोने से क्या कोई हल मिल सकेगा? पुरुषार्थी लोग अपने पुरुषार्थ का मार्ग ढूंढते हैं और कायर लोग जमाने से अपनी स्थिति पर तरस खाने की अपेक्षा करते हैं। ऐसे में हमारे लिए विचारणीय यह है कि क्या हमारी परंपरा कभी रोने धोने की रही है? क्या हम कभी किसी की सहानुभूति के याचक रहे हैं? क्या हमने कभी बेदर्द जमाने से हमारे दर्द को समझने की अपेक्षा की है? यह हमारी परंपरा नहीं रही है। हमारी परंपरा पुरुषार्थ की परंपरा है, कर्मशीलता की परंपरा है, अन्याय का प्रतिकार करने की परंपरा है, अन्यायी का समूल नाश करने की परंपरा रही है और इससे भी बड़ी बात यह है कि शिकायत के कारण या हमारी बबार्दी के कारण के निवारण की परंपरा रही है। हम परिणामों पर रोने वाले लोग नहीं रहे हैं बल्कि परिणामों के कारणों का निवारण कर परिणामों को बदलने वाले लोग रहे हैं। और इसके लिए पहली आवश्यकता है कि हम इन परिणामों के कारणों को जानें और समझें। हमारे सामने स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न पैदा होना चाहिए कि आखिर वे क्या कारण रहे जिनके फलस्वरूप जो जमाना हमसे सहानुभूति की अपेक्षा रखता था, आज हम उससे सहानुभूति की अपेक्षा करने लगे? हम कह सकते हैं कि इसका कारण वे षड़यंत्र हैं जो विगत वर्षों में हमारे खिलाफ किए गये और उसके कारण हमें जमाने के समक्ष खलनायक के रूप में पेश किया गया। निश्चित रूप से हमारी यह बात सही है, हमारे साथ षड़यंत्र हुए और अभी भी हो रहे हैं लेकिन एक दूसरा प्रश्न यह भी है कि हमारे विरुद्ध षड़यंत्र कब नहीं हुए? अपने दायित्व के निर्वहन हेतु अपना सर्वस्व स्वाहा करने को तत्पर रहने वाले हमारे पूर्वजों के खिलाफ सदैव ऐसे षड़यंत्र होते रहे हैं। एक एक महापुरुष के इतिहास को उठाकर देखें तो उनका जीवन ऐसे अनेक षड़यंत्रों के खिलाफ संघर्ष कर अपना कर्तव्य निर्वहन करने की एक कहानी है लेकिन क्या वे षड़यंत्र उनके दायित्व निर्वहन को बाधित कर पाये, जनता जनार्दन में उनके प्रति सम्मान और प्रेम को कम कर पाये? इसका अर्थ यह है कि हमारे विरोधियों के षड़यंत्र तो एक मात्र कारण नहीं हैं बल्कि उन षड़यंत्रों से मुकाबला करने की हमारी अक्षमता एक कारण हो सकती है। वह कौनसी ऐसी बात थी जो षड़यंत्रों के बावजूद हमारे पूर्वजों की महानता को बरकरार रख पायी और उसका आज किस प्रकार अभाव हो गया? उस अभाव को खोजना और फिर उस अभाव को दूर करना ही आज हमारे पुरुषार्थ का प्राथमिक क्षेत्र है। इस आलेख का शीर्षक पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखे एक गीत से निकला है। उन्होंने 24 सितम्बर 1952 को एक गीत लिखा..

मग भूल गया है जो, उसका नहीं कोई रे।
बेदर्द जमाना है, कोई ना किसी का रे।।

इस गीत में उस कारण का संकेत है जिसके कारण उत्पन्न परिणामों पर हम प्रायः झींकते रहते हैं। कारण है हमारा मग भूलना। हमारे महत्व का कारण हमारा वह मार्ग था जिस चल कर हमारे पूर्वजों ने संसार को मार्ग पर चलाया। यहां मार्ग पर चलाया का अर्थ प्रायः हम यह लगाते हैं कि शासन दंड से हम संसार को मार्ग पर चलाया करते थे या उपदेश देकर मार्ग पर चलाया करते थे। लेकिन यह भी एक मिथ्या धारणा है, हमने कभी केवल उपदेश का सहारा ही नहीं लिया, केवल दंड का सहारा भी नहीं लिया बल्कि आचरण द्वारा अपना उदाहरण पेश किया। स्वयं के लिए निर्धारित मार्ग से विचलित नहीं होते थे इसलिए संसार के अन्य लोग भी स्वयं के लिए निर्धारित मार्ग पर बने रहते थे। यहां मार्ग का अर्थ कर्तव्य पालन से है। अपने दायित्व के निर्वहन के लिए स्वयं को सर्वात्मना निमज्जित करने से है। स्वयं के लिए निर्धारित दायित्व से और उसके समुचित बोध से है। यह बोध ही हमें पुरुषार्थ की प्रेरणा देता था और वही पुरुषार्थ अतीत में हमारी बुलंदियों का कारण रहा है और उसी पुरषार्थ से विरत होना ही हमारी आज की स्थिति का कारण है। हमारी सभी शिकायतों का मूल कारण है। इसलिए आज आवश्यकता शिकायतें करने की नहीं है, जमाने को उलाहने देने की नहीं है बल्कि स्वयं में उस कर्तव्य बोध को जागृत करने की है जो हमारे मार्गच्युत होने से विस्मृत हो चुका है क्योंकि जमाना तो बेदर्द होता है। वह आपके गिड़गिड़ाने से, शिकायत करने से या रोना रोने से प्रभावित नहीं होता इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने ऐसी बेचारगी का वर्णन करते हुए लिखा है, 'अंधे की लकड़ी है, मेरा नहीं कोई रे।' अंधे व्यक्ति को भी उसका मार्ग दिखाई नहीं देता लेकिन उसके लिए एक लकड़ी भी सहारा बना जाती है, उसके सहारे वह अपना मार्ग तय कर लेता है लेकिन जो मार्ग पर ही नहीं है उसके लिए तो किसी सहारे की संभावना ही शेष नहीं रहती। इसीलिए अपनी बेचारगी का रोना रोने की नहीं बल्कि अपने भीतर के सोये संकल्प को जागृत करने की आवश्यकता है और पूज्य श्री ने इस गीत में अपने पुरुषार्थ के संकल्प को व्यक्त किया है, अद्वितीय इतिहास से प्रेरणा लेने का संदेश दिया है और फिर पुनः उस मार्ग पर आरूढ़ होकर संसार का पथ प्रदर्शक होने के दायित्व का भान कराया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री के उसी संकल्प का साकार रूप है इसलिए संघ जमाने से शिकायत करने में विश्वास नहीं करता बल्कि इस वास्तविकता को समझता है कि इस बेदर्द जमाने में यह सब होना स्वाभाविक है। इस स्वाभाविकता को स्वीकार कर इससे बाहर निकलने के लिए कदम बढ़ाने की बात करता है। अपने आपको समझने की बात करता है, अपने आपको तौलने की बात करता है। उस तौल जोख के बाद जो कमियां हैं उनको दूर करने को उद्यत होने की प्रेरणा देता है। संघ केवल समस्या का सांगोपांग चित्रण नहीं करता बल्कि समस्या के कारण को जानकर उसे दूर करने को चलायमान होने की प्रेरणा देता है।

शाकम्भरी का चाहमान वंश

पृथ्वीराज तृतीय के समस्त आई प्रारंभिक चुनौतियों में से एक प्रमुख चुनौती पृथ्वीराज के चाचा नागार्जुन की थी। नागार्जुन विग्रहराज चतुर्थ का पुत्र तथा अपरगांगेय का छोटा भाई था। सोमेश्वर की मृत्यु के बाद पृथ्वीराज की अल्पायु का लाभ उठाते हुए नागार्जुन ने चौहान साम्राज्य के कुछ भागों पर अपना अधिकार कर लिया था और गुडपुर (वर्तमान में हरियाणा का गुड़ग्राम) को अपना केन्द्र बना कर चौहान साम्राज्य को अस्थिर बनाए हुए था। स्वतंत्र रूप से शासन संभालने के बाद पृथ्वीराज ने सर्वप्रथम अपने चाचा नागार्जुन के विद्रोह को कुचलने के लिए सैन्य अभियान किया। पृथ्वीराज ने सैन्य बल के साथ गुड़पुर पर आक्रमण किया। भयंकर युद्ध में नागार्जुन पराजित होकर युद्ध भूमि से भाग गया किन्तु उसका सेनापति देवनहर और अनेक अधिकारी युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुए और पृथ्वीराज को विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध के बाद नागार्जुन का कहीं विवरण नहीं मिलता। इसके बाद पृथ्वीराज ने भडांनकों के राज्य पर आक्रमण किया जो कि एक युद्ध प्रिय जाति थी, भडांनकों को परास्त कर उनका राज्य चौहान साम्राज्य में मिला लिया गया। पृथ्वीराज तृतीय एक केन्द्रीय सत्ता के निर्माण के लिए निरन्तर चौहान साम्राज्य के विस्तार में जुटे रहकर एक संगठित और शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के निर्माण के लिए चौहान साम्राज्य के सीमा से लगे राज्यों को विजेता करने में लगे हुए थे। इसी क्रम में पृथ्वीराज तृतीय का संघर्ष जेजाकभुक्ति के चन्देलों के साथ हुआ। पृथ्वीराज तृतीय को समकालीन चन्देल परमार्दिदेव (परमण) था, परमार्दिदेव के शक्तिशाली सेनापतियों आल्हा-उदल, मलखान के नेतृत्व में चन्देल राज्य का निरन्तर विस्तार होता रहा और उसकी सीमाएं चौहान साम्राज्य से टकरा गई। पृथ्वीराज चौहान तृतीय और परमार्दिदेव के मध्य संघर्ष 1182 ई. में हुआ। आल्हा-ऊदल के पराक्रम के कारण यह युद्ध सदैव स्मरणीय रहेगा, लोक मान्यताओं के अनुसार इस युद्ध में उदल के पृथ्वीराज के हाथों मारे जाने पर आल्हा चौहान सेना पर काल बनकर टूट पड़ा, पृथ्वीराज भी इस युद्ध में आल्हा के साथ हुए द्वंद युद्ध में घायल हो गए, गुरु गौरखनाथ के आदेश से आल्हा ने युद्ध भूमि को छोड़कर संन्यास ले लिया। ऊदल के मारे जाने और आल्हा के संन्यास ले लेने से चन्देलों का सैन्य बल कमजोर हो गया और उनकी पराजय हो गई। पृथ्वीराज चौहान का महोबा पर अधिकार हो गया। पृथ्वीराज के मदनपुर से प्राप्त लेख जेजाकभुक्ति पर उसके आक्रमण और विजय का वर्णन प्रस्तुत करता है। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के अनेक सामंत भी वीरगति को प्राप्त हुए। इसके बाद पृथ्वीराज का संघर्ष गुजरात के चालुक्यों के साथ हुआ। अलग-अलग ग्रंथों में इस संघर्ष के अलग-अलग कारण दिए गए है। जहां कुछ ग्रन्थ इस युद्ध में पृथ्वीराज की विजयी बतलाते है वहीं कुछ ग्रंथ अनिर्णित संघर्ष बतलाते है जिसके बाद दोनों पक्षों में परस्पर संधि हो गई। दोनों वंशों के मध्य यह युद्ध 1187 ई. के आस-पास हुआ था।

'भारतीय संविधान और हमारे पूर्वजों के जीवन मूल्य' विषय पर वर्चुअल संगोष्ठी

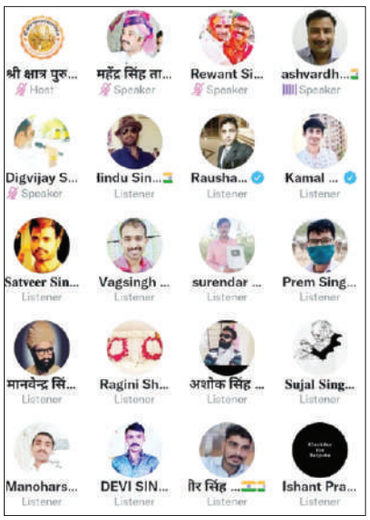

26 जनवरी 2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा 'भारतीय संविधान और हमारे पूर्वजों के जीवन मूल्य' विषय पर ट्विटर स्पेस के माध्यम से वर्चुअल संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें भारतीय संविधान के मूल तत्व और उनके हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित व संरक्षित जीवन मूल्यों के साथ साम्य पर विमर्श किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि भारतीय संविधान की उद्देशिका में जिन मूल तत्वों का वर्णन आता है, यदि गहराई से देखें तो वह सभी हमारे पूर्वजों के ही द्वारा स्थापित किए गए जीवन मूल्य हैं। यदि हम 'संपूर्ण प्रभुत्व संपन्नता' की बात करें तो महाराणा प्रताप, राव चंद्रसेन आदि का संघर्ष इसी संप्रभुता को रेखांकित करता है। घोड़े की पीठ पर लगने वाली मुगलिया सल्तनत की मोहर को अपने ललाट पर लगने वाली गुलामी की मोहर कहकर ठुकराने का साहस करने वाले चंद्रसेन जी संपूर्ण प्रभुत्व संपन्नता के आदर्श प्रतिमान हैं। इसी प्रकार की प्रभुत्व संपन्नता की बात हमारा संविधान करता है कि हमारे राष्ट्र के निर्णय किसी अन्य देश के हस्तक्षेप से नहीं हो। इसी प्रकार समाजवादी शब्द का अर्थ है जिस में समाज को महत्व मिले वह व्यवस्था। हम भी अपने पूर्वजों के इतिहास को देखें तो उन्होंने सदैव समाज को सर्वोच्च महत्व दिया है। मूल रूप में उसी समाजवाद की बात भारतीय संविधान करता है लेकिन निहित स्वार्थों के कारण व्यवस्था चलाने वाले लोग उसका अन्य अर्थ प्रतिपादित करते हैं। इसी प्रकार पंथनिरपेक्षता की बात करें तो इसका आदर्श उदाहरण कोई हो सकता है तो वह हमारे पूर्वज ही हैं। उदाहरणार्थ विभाजन के समय पंजाब, बंगाल आदि क्षेत्रों में पाकिस्तान से लाशों से भरी हुई ट्रेनें आई और यहां से भी ऐसी ट्रेनें पाकिस्तान गई लेकिन राजस्थान में ऐसी कोई घटना नहीं हुई क्योंकि यहां हमारे पूर्वजों का शासन था और वह स्वभावतः पंथनिरपेक्ष थे, बिना किसी भेदभाव के सभी की रक्षा करना उनके खून की विशेषता थी। लोकतंत्रात्मक गणराज्य की बात करें तो हमारे यहां कभी भी व्यक्ति एक इकाई नहीं रहा बल्कि इकाई के रूप में परिवार को ही मान्यता थी और उन परिवारों से मिलकर गण का निर्माण होता था। उन गणों से मिलकर जो गणपरिषद बनती थी वह राजा का चयन किया करती थी। इसलिए गणराज्य की व्यवस्था सर्वप्रथम हमारे पूर्वजों ने ही प्रारंभ की और उसी व्यवस्था को संविधान ने अंगीकृत किया। न्याय की बात करें तो अपने ही पुत्र को सजा देकर न्याय करने के उदाहरण केवल हमारे पूर्वजों ने ही स्थापित किए हैं। स्वतंत्रता की बात करें तो यह तो हमारे खून में समाई हुई है। स्वतंत्रता के लिए जैसा संघर्ष हमारे पूर्वज करते रहे हैं वैसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। व्यक्तिगत गरिमा की रक्षा की बात करें तो हमारे पूर्वजों ने तो मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी की गरिमा का रक्षण करने के लिए भी बलिदान दिए हैं। धर्म और उपासना की स्वतंत्रता का उदाहरण देखें तो दुर्गा दास जी द्वारा अपने शत्रु औरंगजेब के पोते-पोती को इस्लामिक शिक्षा प्रदान करने जैसा दृष्टांत अन्यत्र कहीं भी मिलना संभव नहीं है। राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारे पूर्वजों ने सदैव प्रयास किया है चाहे वह राम हो, कृष्ण हो या आजादी के समय अपनी रियासतों का विलीनीकरण करने वाले हमारे पूर्वज। क्षत्रिय हमेशा व्यवस्था के पालक रहे हैं और इस बात को हमने बार-बार सिद्ध किया है। अधिक पीछे नहीं जाएं तो अभी हाल ही में हीरक जयंती कार्यक्रम में हमारे समाज द्वारा व्यवस्था पालन का कितना सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। हमें इस दुष्प्रचार में नहीं आना है कि हम व्यवस्था के विरोधी हैं, क्योंकि यह दुष्प्रचार हमारे विरोधियों द्वारा हमें अपने मार्ग से हटाकर व्यवस्था पर कब्जा करके उससे अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए किया जाता रहा है और इस दुष्प्रचार में कोई भी सत्यता नहीं है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय समिति के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने संविधान के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि संविधान की मूल प्रति जो संसद भवन की लाइब्रेरी में नाइट्रोजन जार में संरक्षित रखी हुई है, उसके प्रथम पृष्ठ की डिजाइन हमारे ही समाज के कृपाल सिंह जी शेखावत ने तैयार की थी। संविधान की मूल प्रति में हमारे पूर्वज भगवान श्री राम की तस्वीर से मौलिक अधिकारों का वर्णन करने वाले संविधान के भाग का प्रारंभ होता है। इसी प्रकार नीति निर्देशक तत्व का प्रारंभ श्री कृष्ण के गीतोपदेश वाले चित्र से होता है तो अध्याय 5 में वर्णित संघ की व्यवस्था का प्रारंभ भगवान बुद्ध के चित्र से होता है। इस प्रकार से हम देखें तो हमारे पूर्वजों की शिक्षाओं को संविधान में समुचित महत्व दिया गया है। संविधान की उद्देशिका में वर्णित तत्व, जो संविधान के मूल और दिशा निर्धारक तत्व हैं, ये वही मूल्य हैं जिनका रक्षण व संवर्धन हमारे पूर्वजों ने किया था। इसलिए इन मूल्यों का सम्मान करना, उनकी रक्षा करना और उनका पालन करना हमारा कर्तव्य है। कार्यक्रम का संचालन महेंद्र सिंह तारातरा ने किया। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे और कार्यक्रम के अंत में अनेक सहभागियों द्वारा श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन और संविधान के संबंध में जिज्ञासाऐं भी रखी गई जिनका समाधान केंद्रीय कार्यकारी द्वारा किया गया।

जिला समितियों की कार्ययोजना बैठकें

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नई केन्द्रीय परिषद की 16 जनवरी को पुष्कर में आयोजित बैठक में बनी योजना की अनुपालना के क्रम में 23 जनवरी नागौर जिला समिति के सहयोगियों की प्रथम बैठक डीडवाना स्थित वीर दुगार्दास राजपूत सभा भवन में संपन्न हुई। प्रातः 8 से 10 बजे तक आयोजित इस बैठक में केन्द्रीय बैठक के प्रतिवेदन के बिंदुओं के अनुरूप दायित्व सौंपा गया। साथ ही यह तय किया गया कि जिले में नियमित सक्रियता के लिए कहीं न कहीं प्रति सप्ताह एक कार्यक्रम अवश्य किया जाए एवं जिला टीम का प्रत्येक सदस्य 15 दिन में एक बार किसी न किसी कार्यक्रम में भौतिक रूप से अवश्य रहे। इसी दिन अहराह्न 12.15 से 3.00 बजे तक सीकर के निकट स्थित मीरा गर्ल्स स्कूल में सीकर व झुंझुनूं जिले की जिला टीमों के सहयोगियों की बैठक रखी गई। यहां भी उपरोक्त अनुसार काम बांटा गया एवं नियमित सक्रियता हेतु नागौर टीम की तरह योजना बनाई गई। 26 जनवरी को अपराह्न 3 बजे पाली जिले की जिला समिति की बैठक पाली जिला मुख्यालय पर रखी गई। यहां पर भी उपरोक्तानुसार दायित्व सौंपी गई और नियमित सक्रियता की कार्ययोजना बनाई गई।

डीडवाना

सीकर

पाली

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

मेजर मृत्युंजय सिंह अगवरी व मनोहर सिंह ने राजपथ पर किया नेतृत्व

मेजर मृत्युंजयसिंह

मनोहर सिंह

जालोर के अगवरी गांव निवासी मेजर मृत्युंजय सिंह बालोत ने गणतंत्र दिवस पर दिल्ली राजपथ पर होने वाली परेड में 61 कैवेलरी के घुड़सवार दल का नेतृत्व किया। 61 कैवेलरी दुनिया में एकमात्र सक्रिय सेवारत हॉर्स कैवेलरी रेजिमेंट है जिसका गठन 1 अगस्त 1953 को छह राज्य बलों की घुड़सवार इकाइयों को मिलाकर किया गया था। मृत्युंजय सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक शंकरसिंह जी महरोली के दौहिते हैं। इसी प्रकार बीएसएफ में डिप्टी कमांडेंट मनोहर सिंह खींची ने गणतंत्र दिवस की परेड में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के ऊंट दल की परेड का नेतृत्व किया।

कृष्णसिंह राणीगांव सम्मानित

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी कृष्णसिंह राणीगांव को बाड़मेर जिला प्रशासन द्वारा मुख्य ब्लाक शिक्षा अधिकारी के रुप में उनके उत्कृष्ट दायित्व निर्वहन के फलस्वरूप 26 जनवरी को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि उन्होंने इस सम्मान हेतु कोई आवेदन नहीं किया था बल्कि जिला प्रशासन की तरफ से ही ऐसा प्रस्ताव रखा गया।

सूरत की शाखाओं में अधिकतम संख्या दिवस

16 जनवरी 2022 को सूरत शहर की तीनों शाखाओं - वीर दुगार्दास शाखा, पृथ्वीराज शाखा और मल्लीनाथ शाखा में अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया तथा स्वयंसेवकों द्वारा शहर में रहने वाले समाजबन्धुओं से संपर्क कर-के उन्हें शाखा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर मल्लीनाथ शाखा में 125, वीर दुगार्दास शाखा में 121 एवं पृथ्वीराज शाखा में 96 की संख्या रही।

सुमेर सिंह ने जीता स्वर्ण पदक

जोधपुर जिले के सेखाला निवासी सुमेर सिंह ने हाल ही नेपाल में आयोजित इंडो नेपाल दौड़ प्रतियोगिता में 1500 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल किया है। स्वर्ण जीतकर वापिस गांव लौटने पर उनकी सफलता से गौरवान्वित अनुभव कर रहे ग्रामवासियों द्वारा सुमेर सिंह का स्वागत किया गया। सुमेर सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के लगभग 15 शिविरों में भाग ले चुके हैं।

राजू सिंह अकदड़ा का इंडो नेपाल चैंपियनशिप में चयन

बायतु क्षेत्र के अकदड़ा निवासी फुटबॉल खिलाड़ी राजूसिंह का 29 जनवरी से 1 फरवरी तक आयोजित होने वाली इंडो नेपाल फुटबॉल चैंपियनशिप के लिये भारतीय टीम में चयन किया गया है। राजूसिंह अभी अकदड़ा के राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत है।

नशामुक्त विवाह में बांटे तुलसी के पौधे

सोजत क्षेत्र के केवलाद निवासी महिपाल सिंह ने अपने विवाह को नशामुक्त रखते हुए नवाचार के रूप में सभी अतिथियों को तुलसी के पौधे भेंट कर पर्यावरण संरक्षण और संस्कृति के सम्मान का संदेश दिया। महिपाल सिंह ने संघ के चार प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर कर रखे हैं तथा संघ की प्रेरणा से ही विवाह में किसी भी प्रकार के नशे का निषेध किया। महिपाल सिंह का विवाह पैरवा निवासी विजय सिंह की पुत्री धीरज कंवर के साथ हुआ।

राघवेंद्र जी तंवर को पद्म श्री सम्मान

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एमिरेट्स एवं पूर्व कुलसचिव राघवेंद्र जी तंवर को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। आपको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इस सम्मान हेतु चुना गया है। आपको हाल ही में भारत सरकार द्वारा तीन वर्ष के लिए भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR) का चेयरमैन भी नियुक्त किया गया है।

देवकी की प्रमिला कंवर ने किया एनसीसी की सीनियर विंग का नेतृत्व

26 जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर गणतंत्र दिवस की परेड में प्रमिला कंवर ने एनसीसी की सीनियर विंग का नेतृत्व किया। 3 KAR गर्ल्स बटालियन में सीनियर अंडर ऑफिसर प्रमिला कुंवर जालोर जिले की आहोर तहसील के देवकी गांव की मूल निवासी है तथा महारानी विज्ञान महाविद्यालय मैसूरु में बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा है।

मेजर भरत सिंह झाला को दूसरा सेना मैडल

भारतीय सेना में मेजर के रूप में सेवा दे रहे उदयपुर निवासी भरत सिंह झाला को सेना मैडल से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह मैडल 19 अप्रैल 2021 को जम्मू कश्मीर के शोपियां में हिजबुल मुजाहिदीन के दो आतंकियों को 5 घंटे चली मुठभेड़ में मार गिराने के लिए दिया गया है। पिछले वर्ष भी मेजर झाला को सेना मैडल से सम्मानित किया जा चुका है। अब तक देश में केवल तीन योद्धाओं को ही दो बार सेना मैडल से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में 34 राष्ट्रीय राइफल में सेवारत मेजर भरत सिंह झाला पिछले ढाई वर्षों में कुल 14 आतंकियों को ढेर कर चुके हैं।

अस्पताल के लिए दान की 3 बीघा जमीन

सीकर जिले में बानूड़ा निवासी सूरज कंवर पत्नी दिवगंत श्री भैरोंसिंह ने अपनी तीन बीघा जमीन गांव स्थित स्वतंत्रता सेनानी बीड़द सिंह राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को दान कर दी। जगह की कमी के कारण मरीजों व स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों को हो रही परेशानी को दूर करने के लिए उन्होंने जमीन दान करने का निर्णय लिया व ग्राम पंचायत व अस्पताल प्रशासन को जमीन के दस्तावेज सौंप दिए।

हनवंत छात्रावास में महाराणा प्रताप पुण्यतिथि कार्यक्रम

जोधपुर में पावटा स्थित हनवंत छात्रावास में 19 जनवरी को छात्रावास के विद्यार्थियों द्वारा महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर के उनके संघर्ष से प्रेरणा लेने की बात कही गई। गुलाब सिंह बेदु ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(पृष्ठ दो का शेष)

जालोर संभाग में सुरावा शाखा द्वारा वडेसी माता मंदिर में, जसवंतपुरा के श्री राणा नृपाल देव राजपूत छात्रावास में, रोडला (आहोर) व दासपां गांव में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। मातेश्वरी विद्यालय भिंयाड़ में, करणी माता मंदिर बाई पास रोड सूरतगढ़ गंगानगर में भी कार्यक्रम हुए। प्रान्त गुड़ामालानी (बाड़मेर) में उण्डखा, मिठड़ा, रामदेरिया, बूठ, खारी व संस्कारधाम गुड़ामालानी में शाखा स्तर पर कार्यक्रम सम्पन्न हुए। ग्राम पंचायत मूलाना में श्री आईनाथ पब्लिक स्कूल परिसर के खेल मैदान में कार्यक्रम हुआ। मध्य गुजरात संभाग में अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत में काणेटी प्राथमिक शाला, रामजी मंदिर कौका में, अहमदाबाद शहर प्रांत में दरबार सोसायटी नरोड़ा में, गांधीनगर प्रांत के पेथापुर गांव, सेन्ट्रल विस्टा गार्डन गांधीनगर में, चरोतर प्रांत में आध्य शक्ति मंदिर वांटामा खेड़ाजी में जयन्ती मनाई गई। महेसाणा प्रान्त के कडी तहसील के करजीसन गाँव मे रामदेवपीर मंदिर में भी जयंती मनाई गई। गोहिलवाड़ प्रान्त में पछेगाम स्थित हाई स्कूल तथा वल्लभीपुर राजपूत छात्रावास में जयन्ती मनाई गई। मोरचन्द में भी कार्यक्रम हुआ। बनासकांठा प्रान्त में राजपूत होस्टल धानेरा में आयोजित कार्यक्रम में चारडा, जडिया, ऊटवेलिया, नादला, लाछीवाड, सामलवाडा, डुवा, अरजणपुरा, वाघासण, नेनावा, शिया, मोटामेसरा, रामसण, माडल, भाटिब, सिवाना, डेढ़ा, जाडी, मीठा, बोरू, गोला आदि गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। प्रान्त के महाराणा प्रताप होस्टल दियोदर, नारोली में भी जयन्ती मनाई गई। पृथ्वीराजसिंह चौहान शाखा वलादर में 26 जनवरी को जयन्ती मनाई गई। ओसियां स्थित श्री गजसिंह शिक्षण संस्थान, सीकर के बरसिंहपुरा, दिल्ली के चांदनी चौक तथा बायतु प्रांत के सणपा, सेवनियाला, पुनियों का तला, नोसर व चिडिया गांवों में भी जयंती मनाई गई। बांसवाड़ा के गनोड़ा, सेनाला व सुन्दनी गांव में, फरीदाबाद के सेक्टर 8 स्थित महाराणा प्रताप भवन में व पुणे के निगड़ी स्थित दुर्गा माता मंदिर में भी कार्यक्रम हुए। जालोर में पुष्पक नगर जालोर शहर, श्री राव बल्लूजी राजपूत छात्रावास सांचोर, पांचोटा, तरवाड़ा, वलदरा, प्रतापगढ़, उखरडा, मंडला, काम्बा, थूम्बा, मानपुरा, बागोड़ा, सायला, कारोला व बिछावाडी में भी जयन्ती मनाई गई। 26 जनवरी को सूरत की पद्मिनी शाखा तथा मल्लीनाथ शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। 26 जनवरी को ही महाराष्ट्र संभाग द्वारा गूगल मीट पर वर्चुअल कार्यक्रम रखकर जयंती मनाई गई जिसमे केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ उपस्थित रहे। तेलंगाना राज्य के सिकन्दराबाद व बनासकांठा के गागूंदरा में भी जयंती मनाई गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

सीकर

बहुत काम... श्री क्षत्रिय युवक संघ को फॉलो नहीं करेंगे, तन सिंह जी की बातों को स्वीकार नहीं करेंगे तो हम पिछड़ जाएंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के आचरण को यदि भूल गए तो यहां आकर भी क्या होगा? फाउंडेशन भी क्या कर सकेगा? कहीं कोई छोटा-मोटा छेद रह गया बांध में तो एक दिन दरार बनकर टूट जाएगा। छोटी-छोटी बातें हैं जिनको टोकने की कोई जरूरत नहीं है ऐसा शायद आप अनुभव करते होंगे, लेकिन मैं अनुभव करता हूं कि इनको टोके बिना सुधार की संभावना नहीं है। मां-बाप यदि अपने बच्चों को पूर्ण रूप से स्वतंत्र छोड़ देंगे तो संस्कारों का निर्माण नहीं हो पाएगा। अध्यापक यदि बच्चों की लापरवाही को अनदेखा करेंगे तो फिर बच्चों को शिक्षा तो दे सकते हैं पर संस्कार नहीं दे सकेंगे। संस्कार शब्द हर जगह बीच में आता है। हमको संस्कारों का ध्यान रखना चाहिए। ये संस्कार केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ के नहीं हैं, क्षत्रिय के हैं, राजपूत कौम के हैं, उनको पुनर्स्थापित करने, जागृत करने के जो यह अनेक तरह के प्रयास चल रहे हैं, इनमें ढिलाई नहीं होनी चाहिए। चाहे श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा हो या शिविर हो, चाहे फाउंडेशन का कार्यक्रम हो, इनमें एकरूपता होनी चाहिए। जो नियम श्री क्षत्रिय युवक संघ में है वही नियम यहां भी हैं, इनमें लापरवाही नहीं होनी चाहिए। कुछ छूट आपको अवश्य दी है, जो श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में नहीं मिलेगी। संघ का काम कठिन काम है उस कठिन काम को हम यहां भी शुरू कर दें तो हमारा काम ठीक ढंग से चलेगा, उस में कठिनाई नहीं होगी। उन्होंने सभी को फाउंडेशन के स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि अभी तो यह चौथा जन्मदिन है, जिसकी आप सब लोगों को बधाई। ऐसी बैठकें आज कई जगह हो रही हैं और फिर आने वाले दिनों में होंगी। लॉकडाउन के जो नियम है उनका भी हमें इन बैठकों में पालन करना है। हम सिविक सेंस को भूले नहीं, सिविक सेंस यानि नागरिक भाव अर्थात हमारे कारण किसी को तकलीफ नहीं होनी चाहिए। आपने खूब काम किया है लेकिन बहुत काम करना बाकी है, उसके लिए तैयार रहें। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं। कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त भी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का चतुर्थ स्थापना दिवस 12 जनवरी 2022 को प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर कोरोना गाइडलाइन की अनुपालना करते हुए मनाया गया। बाड़मेर के शिव, चौहटन, सेड़वा, सिणधरी, बालोतरा, सिवाना, कल्याणपुर आदि स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। नागौर जिले में नागौर, खींवसर, मेड़ता, कुचामन, लाडनूं, जायल, डीडवाना में कार्यक्रम रखे गए। पाली जिले में पाली, सुमेरपुर, बाली, रानी, देसूरी, मारवाड़ जंक्शन, रायपुर व जैतारण में स्थापना दिवस मनाया गया। जयपुर में चाँद बिहारी नगर, गोकुलपुरा, कनकपुरा, दादी का फाटक, विश्वकर्मा एरिया, भूणावास में कार्यक्रम हुए। उथमण (सिरोही), आसपुर (डूंगरपुर), सत्तू की पादर (बाँसवाड़ा), सरवाड़ (अजमेर), उदयपुर, बिलाड़ा (जोधपुर), खारिया खंगार (जोधपुर), चित्तौड़गढ़, जालोर, भीनमाल, जसवंतपुरा, साँचोर, बीकानेर, नोखा, श्री कोलायत, जैसलमेर, पोकरण, रामगढ़, नाचना, फलसूंड, जोधपुर, साण्डवा (चुरू), श्रीगंगानगर, सूरतगढ़, सीकर आदि स्थानों पर भी सरकारी निदेर्शों का पालन करते हुए कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें फाउंडेशन के उद्देश्य एवं तीन वर्षो के कामकाज पर चर्चा की गई।

जो तनसिंह...

उन्होंने राजपूत समाज को जगाया और आगे जगाने का संदेश हमको दिया कि यह जो मैंने किया वह तुम भी करो। आप लोग जो कर रहे हैं उन्हीं के आदेश का पालन कर रहे हैं। विस्तार दें तो हम कितना भी विस्तार दे सकते हैं इस बात को, लेकिन मुख्य बात यही है कि जो कुछ हो रहा है, जो कुछ हुआ है और जो कुछ होगा, आत्म स्वरूप में तन सिंह जी से ही होगा। हम यदि निर्णय कर लेंगे कि यह मैं कर लूंगा, यह मैंने किया है तो उस दिन हमारी लुटिया डूब जाएगी। तनसिंह जी ने मुझसे यह करवा लिया, भगवान ने मुझसे यह करवा लिया यह भाव हमारे अनुकूल पड़ता है और इसलिए यदि हम भगवान से कभी कुछ मांगे तो यही मांगे कि ऐसी पवित्र संस्था हमको दी है उसमें हम को बनाए रखना। कहीं मैं डिगायमान ना हो जाऊं। स्त्री-पुरुष हों, बच्चे हों, वृद्ध हों, सभी भगवान से यही प्रार्थना करें कि एक सुंदर मार्ग, एक धर्म का मार्ग, एक संस्कृति का मार्ग, जो हमको मिला है, तनसिंह जी के द्वारा, उसको हम अपने आचरण में उतारें। ज्ञान तो जो यहां सुनी हुई बातें हैं कोई भी जा करके सुना देगा लेकिन आचरण के द्वारा बताने वाले लोग हमारे पास बहुत कम है। हजारों नहीं हैं, सैकड़ों में हैं उनके भरोसे पर चल रहा है लेकिन इच्छा यह है तनसिंह जी की भी और हम सब की भी कि ऐसे लोग सैकड़ों से हजारों और हजारों से लाखों में बने जो अपने आचरण द्वारा लोगों को प्रभावित करें। ऐसी ही आकांक्षा हमको रखनी चाहिए। परमेश्वर से यदि मांगना हो तो यही मांगना चाहिए क्योंकि यह भाव ही हमारे परिवार में सुख, शांति और समृद्धि लाएगा। तनसिंह जी ने हमको भगवान का रास्ता बताया, उसको ना भूले। हमको तनसिंह जी बनना है और तनसिंह जी बनने के लिए तन सिंह जी ने जो जो किया, आचरण के द्वारा हमको जो बताया, वैसा हम करें। विद्याध्ययन, परिवार पालन आदि उन्होंने भी किया और हम सब लोग भी कर रहे हैं लेकिन उन्होंने एक मार्ग चुना कि अपने लिए नहीं संसार के लिए जियो और वह उन्होंने करके बताया। उस आचरण का ही प्रभाव है कि संघ चल रहा है। जिस दिन हम लोगों ने अपना आचरण ठीक करने के लिए प्रयत्न करना छोड़ दिया, उसी दिन पूरा संघ नहीं तो कम से कम मैं तो डूब ही जाऊंगा। ऐसे अनेकों लोग डूब गए जो कभी स्तंभ हुआ करते थे, यह अहंकार आ गया कि मैं करने वाला हूं तो वे यहां रह नहीं पाए। आप सब लोगों को आगे का शिक्षण का काम, लोक शिक्षण का काम चालू रखना है। ऐसा हमारा प्रयत्न हो, ऐसी हमारी आकांक्षा हो, ऐसी भगवान से प्रार्थना हो। **जय संघ शक्ति।**

पूनमसिंह सुरावा को मातृशोक

श्रीमती जीण कंवर

संघ के स्वयंसेवक पूनमसिंह सुरावा की माताजी **श्रीमती जीण कंवर** धर्मपत्नी श्री गेन सिंह का 17 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया है। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

मोतीसिंह सेवाड़ा को पितृशोक

श्री उकसिंह

संघ के स्वयंसेवक मोतीसिंह सेवाड़ा के पिता **श्री उकसिंह** का 22 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया है। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को सम्बल प्रदान करें।

महेन्द्रसिंह दौलतपुरा को मातृशोक

श्रीमती सुप्यार कंवर

संघ के स्वयंसेवक महेन्द्रसिंह दौलतपुरा के बड़े माताजी **श्रीमती सुप्यार कंवर** का 22 जनवरी को देहावसान हो गया। महेन्द्रसिंह आपके दत्तक पुत्र हैं। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

नरपतसिंह विराणा को भ्रातृशोक

श्री गोकुल सिंह जी

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम के व्यवस्थापक नरपत सिंह जी चिराना के बड़े भाई **श्री गोकुल सिंह जी** का 14 जनवरी को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

जेठूसिंह सिवाड़ा को पितृशोक

श्री गुलाब सिंह

संघ के स्वयंसेवक जेठूसिंह सिवाड़ा के पिता **श्री गुलाब सिंह** का 25 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्री हनुमान सिंह महरोली का देहावसान

हनुमान सिंह जी

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **श्री हनुमान सिंह जी महरोली** का 19 जनवरी को देहावसान हो गया। अक्टूबर 1949 में महरोली में आयोजित शिविर से वे संघ के संपर्क में आये एवं तदुपरांत संघ को अंगीकार कर नियमित सहयोगी बने। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे आदरणीय सहयोगी

श्री कृष्ण सिंह राणीगांव

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, बाड़मेर को उत्कृष्ट प्रशासनिक दायित्व निर्वहन के लिए जिला प्रशासन, बाड़मेर द्वारा गणतंत्र दिवस पर सम्मानित किए जाने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

गणपत सिंह लाखणी	**कंवराजसिंह** राणीगांव	**उदयसिंह** लाबराऊ	**स्वरूप सिंह** भाडली	**खुमाणसिंह** राणीगांव
तनसिंह राणीगांव	**उदयभानुसिंह** चौहटन	**शंभूसिंह** मीठडा	**हरिसिंह** उंडखा	**समुन्दरसिंह** देदूसर
विजय सिंह माडपुरा	**महिपालसिंह** चूली	**राजेंद्र सिंह** भिंयाड़ (द्वितीय)	**प्रेमसिंह** भिंयाड़	**नींब सिंह** आकोड़ा
नरपत सिंह दुधवा खुर्द	**महेंद्र सिंह** दुधवा खुर्द	**महेंद्र सिंह** चौहटन	**उदय सिंह** देदूसर	**भौम सिंह** बलाई
महेंद्र सिंह भाडली	**हरी सिंह** राणीगांव	**भवानी सिंह** मुंगेरिया	**भगत सिंह** जसाई	**मनोहरसिंह** जिंजनीयाली
थान सिंह खबडाला	**जालम सिंह** उंडखा	**लालसिंह** आकोड़ा	**जब्बरसिंह** लूणा	

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org